Volume-4, No. I, Feb-2017, pp.Hin.-14-16

स्नातक स्तर पर शिक्षण के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी प्रबन्धतंत्र महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों एवं सामाजिक सफलता के मध्य सह–सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन

श्री भानू प्रकाश, शोध छात्र
डा. ग्रिरीश वत्स, प्राचार्य,
ए. टी. एम. एस. ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूट हापुड उ.प्र. भारत।

सार

समाज और व्यक्ति एक दूसरे के पूरक होते है, एक के बिना हम दूसरे के अस्तित्व की कल्पना भी नही कर सकते **मैकाइवर तथा पेज** के अनुसार–"व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध एक तरफ का सम्बन्ध नही है इनमें से किसी एक को समझने के लिए ही आवश्यक है।" **अरस्तू** के अनुसार ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इस बात का सरल अर्थ ये है कि मनुष्य अपने अस्तित्व और विकास के लिए समाज पर जितना निर्भर है, उतना और कोई प्राणी नहीं। मनुष्य में हम जो भी कुछ सामाजिक गुण देखते है वह समाज की ही देन है।" एक व्यक्ति की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है और परिवार का एक अंग है जहाँ हमें सबसे पहले शिक्षा मिलती है। परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं का विकास होता है। आज हमारे समाज का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, ये भी सही है कि परिवर्तन इस संसार का नियम है लेकिन जिस तरह से हमारे समाज में मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, वो सही नहीं है। प्राचीन काल में पाठशालाओं में धार्मिक और नैतिक शिक्षा पाठयक्रम का अभिन्न अंग थे। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा नीति को धार्मिक तथा मूल्य शिक्षा से बिलकुल अलग रखा, उन्होनें राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में इस शिक्षा को पूर्ण रूप से बंद करके धार्मिक तटस्थता की नीति का अनुसरण किया। स्वतन्त्र भारत में भी देश को धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया कि राज्यकोष से चलाई जाने वाली किसी भी संस्था में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी।

मुख्य शब्द–अध्ययन की आवश्यकता, शोध अध्ययन के उद्देश्य, शोध परिकल्पना, परिसीमन शोध क्षेत्र, निष्कर्ष

प्रस्तावना

वर्तमान समय में हमारे मूल्य भी बदल रहे हैं क्योंकि नगरीकरण, आधुनिक सभ्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के कारण नई पीढ़ी के लोग सभी पुरातनपंथी विचारधारा से चिपके नहीं रहना चाहते है। शिक्षा में ऐसे मूल्यों को जोड़ने का असफल प्रयास नहीं करना चाहिए जो युगानुरूप नहीं रह गए है। इसमें धार्मिक कट्टरता, किसी एक धर्म के प्रति आग्रह जैसा भाव नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे शिक्षा बोझिल हो जाती है। सदाचार की वैसी बातें जो सभी धर्मो व सभी संप्रदायों को मान्य है, समाहित कर हम नए, प्रगतिशील समाज की रचना कर सकते है।

हम ऐसी शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था नहीं कर सकते जिसमें पढ़ाई शुरू करने से लेकर रोगजार पाने तक, सम्पूर्ण अवधि के दौरान बच्चों के चेहरे पर मुस्कान बनी रहे। क्या ऐसा करना संभव है? जो हाँ सम्भव है। यदि हम सम्पूर्ण किसी प्रणाली को सृजनशील बना दे और रूझान व क्षमता के आकार पर सभी युवाओं को रोजगार उपलब्ध करा सकें। प्राइमरी स्कूल के स्तर पर बच्चों की सृजनशीलता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। सेकेडरी स्कूल के बच्चों की सृजनशीलता में और निखार लाया जा सके। उद्देश्य यही होना चाहिए कि अंततः उच्च शिक्षा प्राप्त कर छात्र स्वावलंबी बने जिससे वे उद्यमशील हो। उनमें मूल्यों का विकास हो और रोजगार खोजने के बजाए खुद रोजगार पैदा करे। कक्षा में पढ़ाई जितनी महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण यह है कि कक्षा के बाहर बच्चें स्वयं अनुभव के आधार पर क्या सीख रहे है, बच्चों को प्रेक्षण क्षेत्र अध्ययन, प्रयोग और परिचर्चा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। इस मकसद के पाने के लिए विद्यालय को शिक्षा केन्द्र की जगह अपने आप को ऐसे केन्द्र के रूप में डालना चाहिए जहाँ ज्ञान के साथ–साथ कौशल प्राप्त किया जा सके। बच्चों को शिक्षित और तेजस्वी नागरिक बनाने में माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

उन्हे अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। बच्चों के सामने माता–पिता का व्यवहार, आचरण और मूल्यों की मिसाल रखनी चाहिए। इससे बच्चों के मन में माता–पिता के प्रेम और श्रद्धा का विकास होगा। तथा वे उन्हें अपना आदर्श मानेगें। बच्चे जब 18 वर्ष के होते है तब तक उन्हे संवारने का सामूहिक मिशन माता–पिता शिक्षकों, घर एंव विद्यालय परिसर का जिम्मा होता है किन्तु जब वे थोड़े बड़े होकर विद्यालय एंव कालेज जाने लायक होते है तो उन्हें मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता होती है। ऐसे में कालेज का माहौल का बड़ा महत्व है जहाँ छात्रों का चरित्र निर्माण किया जा सके।

अध्ययन की आवश्यकता–

शिक्षा आधुनिक युग की प्रथम आवश्यकता मानी जा सकती है। ग्रामीण समुदाय का जीवन स्तर ही देश का जीवन स्तर माना जाता है। इस समुदाय की प्रगति सम्पूर्ण देश की प्रगति मानी जाती है। भारत को उन्नत व ग्रमीण विकास के क्षेत्र को सर्थक बनाया जाना चाहिये रचानात्मक कार्यो के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में बेकार पड़ी ग्रामीण समुदाय की अपार जनशक्ति और साधन का समुचित उपयोग किया जाना चाहियें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों (कुल छात्र व छात्राओं) के बीच संवेगात्मक सफलता की तुलना करना।
2. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के बीच संवेगात्मक सफलता की तुलना करना।
3. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरन छात्रों (पुरूषों) के बीच संवेगात्मक सफलता की तुलना करना

शोध अध्ययन की परिकल्पना–

1. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों (कुल छात्र व छात्राओं) के बीच संवेगात्मक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के बीच संवेगात्मक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरन छात्रों (पुरूषों) के बीच संवेगात्मक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन शोध क्षेत्र– शोध अध्ययन बरेली मण्डल के स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों तक ही सीमित होगा।

1. न्यायदर्शः कला व विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के अध्ययनरत कुल 600 छात्रों के शोध न्यायदर्श हेतु चुना जायेगा।
2. लिंगः स्त्रीलिंग व पुरलिंग दोनों प्रकार के छात्रों को शोध अध्ययन हेतु चुना जायेगा।

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध कर्त्ता के द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण–प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वयं निर्मित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है जिनमें स्मृति मापनी, अभिवृन्ति मापनी, आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया है

प्रदत्त संकलन की विधि–प्रदत्त संकलन के हेतु शोधार्थी ने न्यादर्श के रूप में चयनित बरेली मण्डल के स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालय 600 छात्रों से स्मृति मापनी–अभिवृन्ति मापनी को प्रशासित किया गया। इसके उपरान्त सांख्यकीय विश्लेषण किया गया है।

सारणी 4.6

बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला और विज्ञान वर्ग छात्रों (महिला एवं पुरूष) के मध्य सामाजिक सफलता

सामंजस्य	कला वर्ग छत्र 243		विज्ञान वर्ग छत्र 327		T-मूल्य	सार्थकता का स्तर
	Mean	S D	Mean	S D		
भावनात्मक	5.28	3.24	5.04	3.46	0.88	N.S.
सामाजिक	9.48	2.95	8.72	3.04	2.97	0.01
वैक्षिक	8.27	3.47	8.03	3.49	0.81	N.S.
सम्पूर्ण	23.03	6.25	21.79	7.25	2.20	0.05

निष्कर्ष

1. सारणी 4.6 प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के भावात्मक सफलता के लिये T-मूल्य 0.88 है जो सार्थक नही है सार्थकता का स्तर 0.05 है। इसलिए षून्य परिकल्पना हैं। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के भावनात्मक सफलता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है ऐसा स्वीकार किया गया है। गणना में यह पाया गया कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के भावनात्मक सफलता में अन्तर वास्तविक नही है लेकिन यह न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। इस प्रकार यह व्याख्या की जा सकती है कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के भावनात्मक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. सारणी–4.6 यह प्रदर्शित करती है कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता के लिए T-मूल्य 2.97 है। जिसका सार्थकता का स्तर 0.01 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है बरेली मण्डल में

स्नातक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नही है। ऐसा अस्वीकृत किया गया।

3. कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता का वास्तविक अन्तर प्राप्त किया जो कि न्यादर्श त्रुटि के कारण नही है। इस प्राकर विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता के माध्य का मान 8.72 है जो कि कला वर्ग छात्रों के 4.6 कला और विज्ञान वर्ग छात्रों (पुरूष एवं महिलाओ) के मध्य सामाजिक सफलता।
4. माध्य के मान 9.48 से कम है। यह व्याख्या की जा सकती है कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता कला वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता से कम है।
5. सारणी–4.6 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के शैक्षिक सफलता के लिये T-मूल्य 0.81 है। जो कि सार्थक नही है। सार्थकता का स्तर 0.05 है। इसलिए शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के शैक्षिक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नही है। ऐसा स्वीकार किया गया। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के मध्य शैक्षिक सफलता में गणना किया गया अन्तर वास्तविक नही है। यह न्यादर्श में त्रुटि के कारण हो सकता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सामाजिक सफलता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. सारणी–4.6 यह प्रदर्शित करती है कि कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सम्पूर्ण सफलता के लिये T-मूल्य 2.20 है जो कि सार्थक है। सार्थकता का स्तर 0.05 है। इसलिये शून्य परिकल्पना है। कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सम्पूर्ण सफलता में कोई सार्थक अन्तर नही है। ऐसा अस्वीकृत किया गया कला वर्ग और विज्ञान वर्ग छात्रों के सम्पूर्ण सफलता में पाया गया अन्तर वास्तविक है। न्यादर्श त्रुटि के कारण नही है। अतः विज्ञान वर्ग छात्रों का सम्पूर्ण सफलता 21.79 है जो कि कला वर्ग छात्रों के सम्पूर्ण सफलता 23.03 से कम है। इस प्रकार व्याख्या की जा सकती हे कि बरेली मण्डल में स्नातक स्तर के सरकारी व निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के छात्रों का सम्पूर्ण कला वर्ग छात्रों के सम्पूर्ण सफलता से कम है।

संन्दर्भ ग्रन्थ–

1. पाल. हंसराज शर्मा मंजुलता,–प्रतिभाशालियों की शिक्षा, शिपरा पब्लिकेशन,दिल्ली।
2. भटनागर , ए0बी0– अधिगम कर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया लाल बुक डिपों–मेरठ।
3. झा, दिलीप कुमार–शोध कार्य, श्री लाल बहादुर संस्कृत विघापीठ विश्वविघालय, दिल्ली
4. लाल, रमन बिहारी– भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा. पं0 श्री राम– अपरिमित संभावनाओं का आधार मानवी व्यक्तित्व, प्रकाशक, अखण्ड ज्योति संस्थान , मथुरा
6. जयसवाल. डा0 सीताराम– सामान्य मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपों नई दिल्ली।
7. कृष्ण मूर्ति जे0– संस्कृति का प्रश्न कृष्णमूति फाउनडेशन इंडिया राजघाट फोर्ट वाराणसी।
8. कुमार, आनन्द– आत्मविश्वास , राजपाल एण्ड संन्स , दिल्ली।
9. जोशी , धनंजय– नैतिक शिक्षा एवं नागरिक शोध कनिडक पब्लिशर्स , दिल्ली
10. Allport, Vernon & Linndzey 1951 A Study of Values. Boston. Houghton Miffin. U.S.A.
11. Armstrong. W.H. 1956 Study is hardwork. Psychological Abstracts No. 30.
12. Gulford, J.P. 1956 Fundamental Statistics in Psychology and Educaiton. Mc Graw Hill. New York.
13. Gulford, J.P. 1956 The Stucture of Intellect. Psychological Bulletin 53(4)
14. Chester, H.& Marrie, R. 1960 Encyclopedia of Educational Research. The Macmillan co. New York.
15. Mitzel, H.E. 1960 Encyclopedia of Educational research. 5th Ed. Macmillan co. New Delhi.
16. Allport, G.V. 1961 Pattern of Growth in Personality. Holt, Rinehart and Winston.
17. Torrence, E.P. 1962 Education and Creative Potential. Univeristy of Minnesota Press, Minnesota.
18. Torrence, E.P. 1962 Guiding Creative Talent. Prentice Hall, Inc. Eaglewood Clift, New Haerry.
19. Mackinnon, D.W. 1963 Creativity and images of the self in education.
20. Taylor, C.W. & 1963 Scientific Creativity: Ist Recognition and Development. Wiley. New York.
21. Raina M.K. 1963 Sex Difference in Creativity in India, Journal of Creative Behavior Vol. 3, Pages 111-114.
22. Drevadahl, J.E. 1964 Some Developmental and Environmental Factors in Creativity. In Taylor, C.W.(Ed) Widening Horizons in Creativity, Wiley New York.
23. Murphy, G. 1964 An Introduction to Psychology. Oxford Book Co. Calcutta Press.
24. Barron, F. 1965 Creative Person and creative process. Holt, Rinehart And Winston, New York.
25. Dreyer, A.S. & Wells, M.B. 1966 Parental Values, Parental Control and Creativity in Young Children. Journal of Marriage and The family. 28, 83-88.
26. Munro, B.C. & Laycock, S.R. 1966 Educational Psychology. The Cops Clark, Toronto.
27. Gulford, J.P. 1967 Creativity : Yesterday, Today and Tomorrow. Journal of Creative Behavior. Vol.1: 3-13
28. Gulford, J.P. 1967 The nature of Human Intelligence. Mc Graw Hill. New York.
29. Raina M.K. 1968 A study of some correlates of creativity in Indian students. Ph.D. University of Rajasthan.